

शैलपुत्री आरती

संपूर्ण आरती • हिंदी पाठ

शैलपुत्री माँ बैल असवार।
करें देवता जय जयकार॥
शिव शंकर की प्रिय भवानी।
तेरी महिमा किसी ने न जानी॥
पार्वती तू उमा कहलावें।
जो तुझे सुमिरे सो सुख पावें॥
रिद्धि सिद्धि प्रदान करे तू।
दया करे धनवान करे तू॥
सोमवार को शिव संग प्यारी।
आरती जिसने तेरी उतारी॥
उसकी सगरी आस पुजा दो।
सगरे दुःख तकलीफ मिटा दो॥
घी का सुन्दर दीप जला के।
गोला गरी का भोग लगा के॥
श्रद्धा भाव से मन्त्र जपायें।
प्रेम सहित फिर शीश झुकायें॥
जय गिरिराज किशोरी अम्बे।
शिव मुख चन्द्र चकोरी अम्बे॥
मनोकामना पूर्ण कर दो।
चमन सदा सुख सम्पत्ति भर दो॥

शैलपुत्री आरती

सरल हिंदी भावार्थ • पढ़ने और प्रिंट करने की जानकारी

भाव 1

माता शैलपुत्री को बैल पर सवार देवी और शिव की प्रिय भवानी कहकर प्रणाम किया गया है।

भाव 2

पार्वती और उमा माता के नाम हैं। सुख, समृद्धि और सिद्धि का वर्णन धार्मिक श्रद्धा का कथन है।

भाव 3

आरती में भक्त अपनी आशाओं की पूर्ति और दुख दूर होने की प्रार्थना करता है। सोमवार और शिव का स्मरण भी आता है।

भाव 4

दीपक और नारियल के भोग का वर्णन है। भक्त श्रद्धा से मंत्र जपता और प्रेम से सिर झुकाता है।

भाव 5

गिरिराज किशोरी का भाव है पर्वतराज हिमालय की पुत्री। अंतिम पद में सुख और कृपा की प्रार्थना की गई है।

पाठ में छोटे क्षेत्रीय शब्दभेद मिल सकते हैं।

यह सरल भावार्थ है, शब्दशः अनुवाद नहीं।

फल और कृपा का वर्णन धार्मिक आस्था है; गारंटी नहीं।

प्रिंट: A4 कागज और "Fit to page" विकल्प चुनें।